प्रेमचन्द : गोदान में नारी भावना

कविता कुमारी

नरवाना जीन्द (हरियाणा)

शोध आलेख सार

प्रेमचन्द का सम्पूर्ण रचना संसार भारतीय नवजागरण, जनसंघर्षों और पीड़ा का जीवंत दस्तावेज है। उनका साहित्य तत्कालीन भारत के विविध पक्षों पर प्रकाश डालता है। प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में नारी विषयक अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि वह पुरुष की प्रेरणा स्त्रोत है। पुरुष की शक्ति के रूप में वह वेदों में जानी जाती है। वे नारी का एक आदर्श रूप स्वीकार करते हैं।प्रेमचन्द ने स्वीकार किया है कि नारी केवल अपने दाम्पत्य जीवन में ही सुखी रहती है और यही उसके लिए शोभाकारक गुण हैं। उन्होंने नारी को एक आदर्श माता,कर्तव्यपरायण, सहनशील माना है। समाज का निर्माण करने वाली नारी ही है। उन्होंने नारी का एक निश्चित क्षेत्र माना है जिसके अंदर रहकर ही शोभा पाती है। वे शिक्षा को नारी के लिए अत्यंत आवश्यक मानते है तथा नारी को पुरुष से श्रेष्ठ माना है।

मुख्य–शब्द : गोदान में नारी पात्र, नारी का आदर्श रूप, नारी और दाम्पत्य जीवन, नारी का मातृत्व, नारी और शिक्षा, नारी का कर्तव्य, नारी का क्षेत्र, नारी और प्रेम, नारी और पुरुष।

गोदान में नारी पात्र – गोदान उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें नारी पात्रों की यथार्थ समायोजना की गई है। धनिया होरी की पत्नी है तथा सोना उनकी बेटी है। ये दोनों नारियॉ आदर्श परम्परा से विवाहित हैं। ग्रामीण अंचल में इसी प्रकार के विवाह स्वीकार्य होते हैं। होरी की दूसरी बेटी रूपा है जिसकी शादी एक वृद्ध रामसेवक से कर दी जाती है। शहरी परिवेश में भी नारियॉ वैवाहिक बंधन में बंधी हुई हैं जिन्हें आदर्श पत्नी कहा जा सकता है। गोविन्दी मिल मालिक खन्ना कीआदर्श पत्नी है। मीनाक्षी दिग्विजय सिंह की धर्मपत्नी है जो परम्परागत भारतीय घरेलू जीवन व्यतीत करना चाहती है। प्रेमचन्द ने नारी के वैवाहिक जीवन को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करके उसमें सुधारवादी विचारधारा को रखा है। वे न तो प्राचीन भारतीय व्यवस्था के पक्षधर थे और न पाश्चात्य नारी स्वतंत्रता चाहते थे। वे नारी को कर्तव्यपरायण, पतिव्रता, सहनशील रूप में स्वीकार करते थे।

नारी का आदर्श रूप : प्रेमचन्द एक सुधारवादी उपन्यासकार थे। उन्होंने नारी की दुर्दशा देखी और उसका परिवर्तनीय रूप प्रकट किया। वे नारी के आदर्श रूप को प्रकट करते हैं। उन्होंने धनिया को एक आदर्श माता के रूप में चित्रित किया है जो अपने बेटे गोबर का साथ देती है तथा झुनिया को अपने पास रखती है। प्रेमचन्द नारी के आदर्श को इतना महान् चाहते थे जिसमें किसी प्रकार की विकृति न हो, जहॉ पर न कोई द्वेष या ईर्ष्या हो और न ही प्रतिहिंसा की भावना। उनमें कोई कमजोरी व सहनशीलता का अभाव न हो वही सच्चे अर्थो में नारी है। प्रेमचन्द अपना कथन इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं–

''संसार में जो कुछ सुन्दर है, उसी की प्रतिमा को मैं स्त्री कहता हूँ; मैं उससे आशा रखता हूँ कि उसे मार ही डालूँ तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें न आये; अगर मैं उसकी ऑखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूँ, तो भी उसकी ईर्ष्या न जागे। ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पड़ूँगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूँगा।''[1]

नारी और दाम्पत्य जीवन : नारी अनेक गुणों से सम्पन्न तथा महान् गुणों पर आचरण करने वाली होनी चाहिए। सच्चा सुख यदि नारी और पुरूष को प्राप्त हो सकता है तो उसका आधार है–आदर्श दाम्पत्य जीवन; जिसके लिए नारी को पतिव्रत्य धर्म अपनाना चाहिए। शहरी जीवन में गोविन्दी एक ऐसी नारी है जिसमें पतिव्रत्य गुण है। धनिया और होरी का जीवन भी सुंदर दाम्पत्य जीवन का उदाहरण है, वहॉ आपसी प्रेम है, कलह है, परन्तु दोनों एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं। प्रेमचन्द की दृष्टि में विवाह आत्मसमर्पण है। जहॉ विवाह व्यक्ति के विकास में बाधक है वहॉ दाम्पत्य जीवन में सुखद जीवन की सार्थकता है। प्रेमचन्द जी कहते हैं–

Note : For Complete paper please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper